अतिमानस

अतिमानस, सच्चिदानन्द का सृजनात्मक पक्ष है। चूँकि सच्चिदानन्द अनन्त शक्ति, अनन्त सत्ता और अनन्त आनन्द है, यह सम्भव नहीं है कि उसकी सभी सृजनात्मक शक्तियाँ एक साथ अभिव्यक्त हो जाएँ। सच्चिदानन्द में अनन्त सम्भावनाएँ हैं। अतिमानस, सच्चिदानन्द के कुछ अन्त:शक्तियों को चुन लेता है और उनकी सृष्टि एवं सुस्पष्ट अभिव्यक्ति करता है। यदि सच्चिदानन्द की सभी अव्यक्त शक्तियाँ एक साथ अभिव्यक्त हो जाएँ, तो सर्वत्र अव्यवस्था फैल जाएगी, और यह विश्व भी नहीं रह जाएगा। अतिमानस के बिना सच्चिदानन्द के सम्भावनाओं की सृष्टि नहीं हो सकती। अतिमानस, सच्चिदानन्द की कुछ सम्भावनाओं की सृष्टि करता है एवं उसकी अनन्त सम्भावनाओं को अभिव्यक्त होने से रोकता भी है। परम सत्ता की सृष्टि तथा अभिव्यक्ति अतिमानस के द्वारा होती है। अतिमानस, वह सृजनात्मक सत्ता है जो सच्चिदानन्द के साथ समन्वित है। इसमें सच्चिदानन्द की विश्वातीत तथा अनन्त सम्भावनाओं को अभिव्यक्त तथा सृष्टि करने का सामर्थ्य है।

अतिमानस, सच्चिदानन्द का ईश्वरीय पक्ष है। अतिमानस या ईश्वर दिक् तथा काल में व्याप्त सच्चिदानन्द है। जबकि सच्चिदानन्द विश्वातीत सत्ता है, अतिमानस उसका अन्त:स्थ सृजनात्मक रूप है। सच्चिदानन्द की अभिव्यक्ति सिर्फ़ सृजनात्मक अतिमानस के द्वारा ही सम्भव है। श्री अरविन्द कहते हैं, "यह सब को धारण करने वाला, सब को उत्पन्न करने वाला, सब की पूर्णावस्था है। अतिमानस निश्चय ही अपने रूप में नहीं, अपितु प्रभु एवं अपने लोकों के सृष्टिकर्त्ता के रूप में दिव्य सत्ता है। यह वह सत्य है जिसे हम ईश्वर कहते हैं।"१

---

१. द् लाइफ डिवाइन, पृष्ठ—१२३।

Scanned by TapScanner

अतिमानस को श्री अरविन्द चित्-शक्ति, ज्ञान-संकल्प, सत्-चित्, और ऋत-चित कहते हैं। इसे चित्-शक्ति या ज्ञान-संकल्प इसलिए कहते हैं कि यह स्वयं अन्तर्व्याप्त दिव्य चेतना है तथा इसमें विश्व की रचना एवं विकास करने की शक्ति है। यह सृजनात्मक चेतना है जिसमें ज्ञान तथा शक्ति का पृथक अस्तित्व नहीं रहता है। अतिमानस, ईश्वरीय नियम या ऋत्-चित् भी है जो विश्व की समस्त क्रियाओं को संचालित करता है। यह सृष्टि, विकास, परिवर्तन, अभिव्यक्ति तथा रूपान्तर का सिद्धान्त है। प्रकृति में अनावरण, आरोहण तथा रूपान्तर चलता रहता है क्योंकि अतिमानस, चित्-शक्ति, उन्हें प्रबल रूप से संचालित और निर्देशित करता रहता है।

दर्शन की अनेक ऐसी प्रणालियाँ हैं जिसमें निरपेक्ष सत्ता की अवधारणा है, किन्तु ईश्वर का उसमें कोई स्थान नहीं है। कुछ ऐसे भी दार्शनिक सिद्धान्त हैं जो ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं किन्तु निरपेक्ष सत्ता के अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं। किसी दार्शनिक ने निरपेक्ष सत्ता के साथ ईश्वर के अस्तित्व का सामंजस्य प्रस्तुत नहीं किया है। यदि निरपेक्ष सत्ता यथार्थ है, तो ईश्वर भ्रम स्वरूप है, जैसा कि अद्वैत दर्शन में हम पाते हैं। किन्तु निरपेक्ष सत्ता के अन्तर्व्याप्त सत्ता, ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करके अद्वैत वेदान्त मायावाद के सिद्धान्त का समर्थन करता है, जो विश्व को भ्रम मानता है। ईश्वर को ब्रह्म के साथ समन्वित करने में अनेक कठिनाइयाँ हैं। अनेक प्रणालियों में हम पाते हैं कि ईश्वर की कोई तात्त्विक सत्ता नहीं है। किन्तु श्री अरविन्द के दर्शन में सच्चिदानन्द तथा ईश्वर के बीच समुचित सामंजस्य पाते हैं। अतिमानस या ईश्वर सच्चिदानन्द की वास्तविक सृजनात्मक शक्ति है।

सच्चिदानन्द के तीनों पक्ष, सत्, चित्-शक्ति ओर आनन्द, विश्वातीत हैं। अतिमानस उसका चतुर्थ तथा अन्तःस्थ पक्ष है। सच्चिदानन्द विश्वातीत तथा अन्तःव्याप्त सत्ता दोनों है। उन शक्तियों के अतिरिक्त जो जगत् में अभिव्यक्त होती हैं, उसकी समस्त अनन्त सम्भावनाएँ विश्वातीत रहती हैं। अतिमानस, सृष्टिकर्त्ता, मुक्तिदाता, रक्षक, और अनुभवातीत, चित्-शक्ति, सत् और आनन्द की अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

ब्रह्म तथा ईश्वर के बीच समन्वय में कठिनाई का कारण यह है कि दोनों को पृथक् और भिन्न सत्ताएँ समझा जाता है। श्री अरविन्द के अनुसार अतिमानस सच्चिदानन्द से भिन्न नहीं है, सच्चिदानन्द विश्वातीत और

Scanned by TapScanner

अन्तर्व्याप्त सत्ता एवं शक्ति दोनों है। यह निरपेक्ष सत्ता और ईश्वर का संयुक्त रूप है। सच्चिदानन्द का रचनात्मक पक्ष उतना ही यथार्थ है, जितना उसका विश्वातीत पहलू है। अतिमानस, सच्चिदानन्द की भ्रामक शक्ति नहीं है। अतिमानस को सच्चिदानन्द से अलग नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यह उसका सृजनात्मक पक्ष है। यह सदैव सच्चिदानन्द की शक्तियों की अभिव्यक्ति में संलग्न रहता है। सच्चिदानन्द की अनुभवातीत सम्भावनाओं की सम्पूर्ण सृष्टि, विकास तथा अभिव्यक्ति अतिमानस के द्वारा सम्पन्न होती है।

श्री अरविन्द, अतिमानस को सच्चिदानन्द तथा जगत् के बीच मध्यस्थ तत्त्व मानते हैं। सृष्टि तथा अभिव्यक्ति, अतिमानस के द्वारा ही सम्पन्न होती हैं। जगत् की रचना तथा श्रेष्ठ आध्यात्मिक तत्त्वों की अभिव्यक्ति अतिमानस के ऊपर निर्भर करती है। अतिमानस विश्व विकास को निर्देशित करता है। वह विश्वातीत ब्रह्म और जगत् का मध्यस्थ है। सच्चिदानन्द और जगत् दो चरम तत्त्व हैं जिसके बीच अतिमानस मध्यस्थ तत्त्व है। अपने अविकसित अवस्था में जगत्, ईश्वर के भिन्न रहता है। किन्तु अतिमानस के द्वारा ही सच्चिदानन्द का इस विश्व में प्रकाशन होता है। सच्चिदानन्द का सृजनात्मक रूप, अतिमानस है। अतिमानस 'सच्चिदानन्द' का अन्तर्व्याप्त चित्-शक्ति है। श्री अरविन्द कहते हैं, "निस्सन्देह, स्वयं सच्चिदानन्द ही यह तत्त्व है, किन्तु यह वह सच्चिदानन्द नहीं जो अपनी शुद्ध अनन्त, अपरिवर्तनशील चेतना में स्थित है, वरन् वह है जो इस आद्य स्थिति से चलकर, बल्कि उसी को आधार बनाकर, उसमें ऐसी गति लाता है जो उसकी ऊर्जा का रूप और विश्व-सृष्टि का उपकरण है।"१

अतिमानस की त्रिविध स्थिति

अतिमानस की तीन स्थितियाँ हैं। यह अपनी सर्वोच्च अवस्था में सच्चिदानन्द के साथ संयुक्त रहता है। यह ऐक्यवादी चेतना है और दिक् एवं काल में सच्चिदानन्द का विस्तृत रूप है। अतिमानस की दूसरी स्थिति बोधगम्य चेतना की अवस्था है जिसमें सृष्टि की सम्भावनाएँ हैं। यह हिरण्यगर्भ के समान, सम्भावना या विश्व बीज है जिससे विश्व उत्पन्न होता है। सच्चिदानन्द के इस दूसरे पक्ष में विश्व सृष्टि की सम्भावना तथा सच्चिदानन्द

१. द् लाइफ डिवाइन, पृष्ठ—१३४।

की क्षमताओं की अभिव्यक्ति निहित है । अतिमानस की तीसरी स्थिति प्रक्षेपी चेतना है, जो मानस, जीवन तथा जड़ से विश्व की रचना करता है ।

श्री अरविन्द अतिमानस की तीन स्थितियाँ—अवधारक चेतना, प्रज्ञान चेतना और प्रक्षेपी चेतना को कल्पना करते हैं । पहली स्थिति अवधारक चेतना, ऐक्यवादी चेतना है जिसमें अतिमानस सच्चिदानन्द के साथ संयुक्त रहता है । दूसरी स्थिति अतिमानस की वह अवस्था कहलाती है जिसमें सच्चिदानन्द से इसकी प्रारम्भिक एकता के विघटन एवं पृथक होने की अवस्था है । इसमें सृष्टि की सम्भावना है । अतिमानस की तीसरी स्थिति, अनेकता, तथा जगत् की सृष्टि में निहित है । इसमें हम जगत् की सृष्टि का आरम्भ पाते हैं । अपने प्रक्षेपी पक्ष में अतिमानस जगत् की सृष्टि करता है ।

अपनी प्राथमिक स्थिति में अतिमानस ,सच्चिदानन्द के साथ संयुक्त रहता है । वह अपने देश तथा काल रहित सत्ता के शाश्वत विश्रान्ति में रहता है । लेकिन अतिमानस की ऐक्यवादी चेतना में शुद्ध एकता तथा अनुभवातीत अस्तित्व नहीं रहता है । एक मात्र सच्चिदानन्द ही कालरहित, देशरहित, अनुभवातीत सत्ता, चित्-शक्ति और आनन्द है । यद्यपि अतिमानस दिक् तथा काल में सच्चिदानन्द है, इसमें सच्चिदानन्द की अनुभवातीत एकता का अभाव रहता है । यह सर्व-अवधारक और सर्व-आधिकारिक है । विश्व, इस अवस्था में अपनी अभेद एकता में स्थित रहता है । विविधता और अनेकता अतिमानस की पूर्ण एकता में विद्यमान रहती हैं । जब आत्मा अतिमानस की मूल स्थिति के साथ एकता को प्राप्त करता है, तो वैयक्तिकता का सम्पूर्ण भाव तिरोहित हो जाता है । वैयक्तिक विकास का समर्थन करने के लिए इसमें चेतना का एकाग्रीकरण नहीं पाया जाता है । जिस प्रकार चेतना में विचार और बिम्ब भिन्न नहीं होते हैं, अनेकता तथा विविधता अतिमानस की अवधारक चेतना में संयुक्त रूप में विद्यमान रहते हैं । चेतना, शक्ति तथा संकल्प में कोई भेद नहीं रहता है, न हीं अतिमानस की मौलिक रचनात्मक ऊर्जा में जड़ और आत्मा के बीच कोई अन्तर रहता है ।

अतिमानस की प्रारम्भिक स्थिति में विश्व और विभिन्न सत्ताएँ, पूर्ण एकता में समाहित रहती हैं । अनेकता विविधता की अन्त:स्थ एकता दूसरे सोपान में विकसित होती हैं । अतिमानस सच्चिदानन्द की सम्भावनाओं का प्रत्यक्ष ज्ञान रखता है और उसमें उनकी रचना एवं अभिव्यक्ति की

Scanned by TapScanner

सृजनात्मक प्रवृति तथा गत्यात्मक-शक्ति रहती है। अतिमानस को संचालित करने वाली चेतना भी सच्चिदानन्द से निःसृत होती है। चूँकि अपनी प्रथम स्थिति में यह सच्चिदानन्द के साथ पूर्णतः एकत्व में रहता है, उसे ज्ञान-संकल्प या ऋतचिन्मय भी कहा जाता है।

यद्यपि सच्चिदानन्द स्वयं विश्वातीत रहता है, वह अतिमानस के माध्यम से कार्य करता है। सच्चिदानन्द, पूर्ण अद्वैत है जिसमें चित्-सत् है, सत् आनन्द है और आनन्द चित् है। सत्, चित् तथा आनन्द सच्चिदानन्द में अविभक्त रूप में रहते हैं। अतिमानस के अतिरिक्त सच्चिदानन्द का किसी अन्य प्रकार से प्रक्षेपण नहीं हो सकता है। श्री अरविन्द कहते हैं, "ब्रह्म अपने शुद्ध अस्तित्व से चित् शक्ति एवं आनन्द की क्रीड़ा के द्वारा तथा अतिमानस के रचनात्मक माध्यम से विश्व-सत्ता में अवतरित होता है। हम जड़ से दिव्य सत्ता की ओर अतिमानस के माध्यम द्वारा ही भगवान् की ओर आरोहण करते हैं"१

दूसरी स्थिति में, अतिमानस अमूर्त्त सम्भाव्य रूप में, सत्ताओं की सृष्टि करता है। यह वैयक्तिक केन्द्रों में चित्-शक्ति को एकेन्द्रित करता है। ऐक्यवादी चेतना से अनेकता विकसित होती है। इसमें विभेदी, अनेकता तथा विविधता संयुक्त रूप में पाए जाते हैं। अनेकता विकसित होती है। तथा दूसरी अवस्था में अपना पृथक अस्तित्व को वे प्राप्त करती हैं। लेकिन उसकी एकता नष्ट नहीं होती है। एक से अनेक की रचना सम्भाव्य रूप में ग्रहण करती है। इसमें अनेकता में एकता पायी जाती है। विश्व की अनेकता, विविधता और विभिन्न सत्ताएँ अतिमानस में विद्यमान रहती हैं। वे अपने स्रोत, अतिमानस, में संयुक्त रूप में रहती हैं। प्रज्ञान अतिमानस में सम्भावनाएँ वर्तमान रहती हैं जो विश्व की रचना में विकसित होती हैं। सत्ताओं का उद्गम, प्रज्ञान अतिमानस की चेतना में पायी जाती हैं। प्रज्ञान अतिमानस में हम सृष्टि का आरम्भ पाते हैं। आत्माओं की अनेकता इस अवस्था में विभाजित हो जाती हैं। किन्तु वे एकत्व की अवस्था में विद्यमान भी रहते हैं।

तीसरे सोपान में वैयक्तिक आत्माएँ पृथक-पृथक हो जाती हैं। प्रत्येक वैयक्तिक आत्मा की पृथक सत्ता रहती है। सभी आत्माएँ जगत् में निवास

---

१. द् लाइफ ऑफ डिवाइन, पृष्ठ—२४३।

Scanned by TapScanner

करती हैं। अतिमानस सिर्फ़ विभिन्न तत्त्वों की रचना ही नहीं करता है अपितु आत्माओं की एकता और स्वयं अपनी सत्ता को बनाए भी रखता है। यह प्रज्ञान चेतना, प्रज्ञा, अतिमानस की दूसरी स्थिति है जो सम्पूर्ण की वैयक्तिक एकता को खंडित करता है और आत्माओं का सृजन, और उन्हें पृथक-पृथक करता है। अतिमानस में आत्माओं की अभिव्यक्ति का बोध हो जाता है। इस प्रकार प्रज्ञान चेतना, आत्माओं तथा प्रकृति दोनों की सृष्टि करती है। फिर भी अतिमानस में आत्माएँ तथा प्रकृति संयुक्त रूप में विद्यमान रहती हैं।

अतिमानस में, अवधारक चेतना और प्रज्ञान चेतना दोनों की शक्ति पायी जाती है। यह अपने में सभी वस्तुओं को समाहित किये रहता है। अवधारक स्थिति में अतिमानस पूर्ण रहता है। प्रज्ञान चेतना एक से अनेक की सृष्टि करती है। श्री अरविन्द कहते हैं, "अतः अतिमानस, विज्ञान तथा प्रज्ञान की द्विविध कर्म-शक्ति के द्वारा अग्रसर होता है; मूलगत एकत्व से परिणामगत बहुत्व की ओर बढ़ता हुआ वह निखिल वस्तुओं का अवधारण अपने आप के अन्दर इस भाँति करता है मानो वह स्वयं ही अपने बहुविधि रूपों को धारण किये हुए 'एक' हैं और वह निखिल वस्तुओं का पृथक-पृथक प्रज्ञान अपने आप के अन्दर पाता है मानों वे उसकी इच्छा एवं ज्ञान के विषय हैं। जबकि उसकी आद्य आत्म-संवित में सारी वस्तुएँ एक ही सत्ता, एक ही चेतना, एक ही इच्छा, एक ही आत्मानन्द हैं और वस्तुओं की समग्र गति एक ही तथा अविभाज्य गति है, वह अपनी क्रिया में एकत्व से बहुत्व की ओर, और बहुत्व से एकत्व की ओर जाता है।"१

अतिमानस की प्रथम स्थिति में सच्चिदानन्द की संभावनाएँ तथा प्रच्छन्न शक्तियाँ रहती हैं। सभी प्रच्छन्न शक्तियाँ उसमें समाविष्ट रहती हैं। वह सभी सृष्टि तथा अभिव्यक्ति का स्रोत है। अतिमानस का कार्य उन शक्तियों को मूर्त्त रूप देना तथा अभिव्यक्त करना है। इसकी गति निर्णायक होती है और काल एवं दिशा के विस्तार में, दूसरी अवस्था में अनेकता का अभ्युदय होता है। कुछ संभावनाएँ अभिव्यक्त होती है और अन्य की अभिव्यक्ति नहीं होती है। किन्तु उन संभाव्य तत्त्वों का अतिमानस की एकता से स्वतंत्र एवं पृथक अस्तित्व नहीं है।

अतिमानस की तीसरी स्थिति को प्रक्षिप्त अतिमानस कहते हैं। यह विभिन्न तत्त्वों को पृथक तथा स्वतंत्र रूप में विकसित करती है। प्रक्षिप्त

१. द् लाइफ़ डिवाइन, पृष्ठ-२४२.

Scanned by TapScanner

चेतना, यथार्थ वस्तुओं एवं विश्व की रचना करती है। यह प्रक्षिप्त चेतना है जो जड़, जीवन, मानस और आध्यात्मिक चेतना के श्रेणियों से युक्त इस विविधतापूर्ण विश्व की रचना करती है। प्रक्षिप्त चेतना उन सभी अव्यक्त क्षमताओं को यथार्थ रूप प्रदान करती हैं जो अतिमानस की प्रथम और द्वितीय अवस्था में अप्रकाशित रहती हैं। ब्रह्म और जड़, जीवन और चेतना के बीच में द्वैत की सृष्टि इस प्रकार होती है कि उनके बीच का अन्तर चिरन्तन प्रतीत होता है। विश्व की विभिन्न वस्तुओं का पृथक अस्तित्व है और उनमें प्रारम्भिक एकता की कोई चेतना अवशेष नहीं रहती है।

श्री अरविन्द अतिमानस की त्रिविध अवस्था का वर्णन इस प्रकार करते हैं, "हम देखते हैं कि स्वयं अतिमानस के तत्त्व में उसकी जगत्-संस्थापिका चेतना की तीन सामान्य स्थितियाँ या तीन सत्र होते हैं। प्रथम स्थिति वस्तुओं के अविच्छेद एकत्व को आधार देती है, दूसरी उस एकत्व को इस प्रकार परिवर्तित करती है कि एक में बहु और बहु में एक की अभिव्यक्ति को अवलंब प्राप्त होता है; तीसरी उसे इस भाँति और परिवर्तित करती है कि नानाविध व्यष्टि के विकास-क्रम को अवलंब प्राप्त होता है, यह व्यष्टि ही अविद्या की क्रिया के द्वारा निम्नतर स्तर पर; हमारे अन्दर पृथक अहम् का भ्रम बन जाती है।"१

उपर्युक्त उद्धरण में हम देखते हैं कि अतिमानस की इन अवस्थाओं में तीन प्रकार की क्रियाएँ होती हैं। प्रथम अवस्था में हम पाते हैं कि अतिमानस, काल तथा देश में सच्चिदानन्द है। यह सच्चिदानन्द का अन्तःस्थ पक्ष है। अतिमानस की दूसरी अवस्था में अनेकता तथा विविधता का आविर्भाव होता है, लेकिन वे संयुक्त रूप में रहती हैं। चित्-शक्ति अपने को आत्माओं की अनेकता तथा प्रकृति में पृथक-पृथक सत्ताओं का विभाजन करती है। किन्तु आत्माएँ फिर भी संयुक्त रूप में तथा अभिन्नता में रहती हैं। पुरुष तथा प्रकृति, आत्माएँ तथा यथार्थ सत्ताएँ इसमें अव्यक्त रूप में अलग रहती हैं। किन्तु उन सभी में आन्तरिक एकता रहती है। 'अनेक', 'एक' में संयुक्त होता है, तथा 'एक' 'अनेक' में अभिव्यक्त होता है। अतिमानस की तीसरी अवस्था में आत्म-रूपों की अनेकता की पृथक सत्ता रहती है। वे प्रकृति में व्यक्तिगत तथा पृथक रूप में निवास करते हैं। किन्तु आत्माओं और प्रकृति की सत्ताओं से परे अतिमानस सदैव ऐक्य में विद्यमान् रहता है। अतिमानस की तीन

१. [illegible] पृष्ठ-१३५.